



## Effective pink bollworms management strategy demonstration by CICR scientists to Hingna cluster tribal farmers under *MGMG*

A team of scientists of ICAR-CICR, Nagpur Scientists Dr. Suman Bala Singh, Principal Scientist (Plant Breeding), Dr. Dipak T. Nagrale, Scientist (Plant Pathology) and Mr. Rakesh Kumar, Scientist (Agril. Biotechnology) visited the adopted villages (Mangli, Nandakhurad, Junewani, Salaimenda and Ukhadi) on 1<sup>st</sup> August, 2018 under Hingna cluster of *Mera Gaon Mera Gaurav Program*. The method of installation of pheromone traps were demonstrated and technical know-how about observation to be taken for effective management of pink bollworms was provided to the farmers. On the occasion fifteen tribal farmers from Salaimendha village were distributed with two pheromone traps and six lures to each farmer for monitoring of pink bollworms in BG-II cotton hybrids in one acre of area. The leaflets of “integrated pink bollworm management” and “safe use of pesticides” (Marathi) developed by CICR were distributed among the farmers. Similarly, the recommended package of practices in cropping season was explained in detail.



## Scientists surveyed cotton fields of Kalamb taluka, Yavatmal district and for assessed pest's infestation & HT cotton cultivation

A team comprising of Scientists, Dr. T. R. Loknathan, Principal Scientist, Dr. Sunil S. Mahajan, Senior Scientist and Sh. Bhumeshwar Fande, Technical Officer conducted one day tour on 18.09.2018 to survey the cotton fields and to collect boll and leaf samples to assess the status of insect pests infestation, diseases damage and cultivation of HT cotton in the villages of Kalamb taluka of Yawatmal district. With prior information to the concerned DSAO and SDO, deputed Taluka Krishi Mandal Adhikari Sh. Shubhrakant S. Bhagat and his agriculture assistant Sh. Borimal to accompany the team for the survey programme. During the one day survey visit, the team has covered Joldhani, Karak, Rasa, Malkapur, Khatri, Pathrad, Bori Mahal, Kamatwada and Galamgaon villages of Kalamb Tehsil. Overall, fifteen cotton farmers fields were visited and fifteen leaf samples (10 leaf samples/10 plants per acre) and fifteen boll samples (10 boll samples/10 plants per acre) were collected from rainfed as well as irrigated fields as per the standard operation procedures provided by the PI of the IRM project. General observations were recorded and found that the farmers were mostly growing Bt cotton hybrids of private seed companies along with Arhar as intercrop. Majority of farmers have grown Bt cotton hybrid, Ankur 3028 in their fields. Few farmers have preferred

Tiger, Kaveri and Polaris Bt cotton hybrids along with Ankur 3028. The cotton crop was excellent in condition having well developed boll formation, neat and cleaned field with negligible infestation of American boll worms. The infestation of sucking pest was below ETL levels. However, rainfed cotton crop was needed immediate irrigation as there was shortfall of rains in the area. Most of the farmers preferred to spray Confidor, Regent, Chiarchek, Monosil, larvin, Lancer Gold, Neem Ark and Acephate insecticides in mixed form for attack of sucking pests and boll drop to avoid the incremental labour costs of Rs. 300 to 400/- per spray per day. Cotton growing farmers were aware of latest technology and they have installed pheromone traps and used protective aids while spraying. Few farmers have adopted light traps also. The farmers were well conversant with the practices and appropriate guidance from State Agriculture Officers and Assistants to maintain the crop condition.



Latitude: 20.474841  
Longitude: 78.34731



Latitude: 20.439098  
Longitude: 78.327

### Meetings/trainings attended

- Dr VS Nagrare Participated in Nagpur district level committee for pink bollworm management at Collector's Office Nagpur. The meeting was chaired by the Collector, Nagpur 14th Sept 2018

### Newspaper coverage

**केन्द्रीय कपास अनुसंधान केन्द्र का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन**

सिरसा। केन्द्रीय कपास अनुसंधान केन्द्र सिरसा कॉर्टन के विकास में अति महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है और संस्थान द्वारा किए जा रहे शोध कार्य से नरमा-कपास पर खर्च होने वाली दवाइयों का बोझ कम होगा तथा यातावरण भी प्रदूषणमत्क बनेगा। फसल पूरी तरह सुरक्षित ढंग से विकसित हो सकेगी और खेत व किसान दोनों को इसका लाभ होगा। डॉ. मोंगा ने बताया कि संस्थान के कृषि वैज्ञानिक डॉ. ऋषि के नेतृत्व में विभिन्न कीटों में दवाओं की मारक क्षमता की पहचान करने का कार्य किया जा रहा है अर्थात किस-किस श्रेण 3 पर...

में यह बात उभरकर आई है। केन्द्र सरकार के निर्देशन में चार सदस्यों की एक टीम ने सिरसा केन्द्र का अवलोकन किया तथा संस्थान द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों की विस्तृत समीक्षा करते हुए संस्थान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अकोला यूनिवर्सिटी के पूर्व चाईस चांसलर डॉ. एस.ए. श्रेण 3 पर...

**यह होगा लाभ :**

इस शोध कार्य से नरमा-कपास पर खर्च होने वाली दवाइयों का बोझ कम होगा तथा यातावरण भी प्रदूषणमत्क बनेगा। फसल पूरी तरह सुरक्षित ढंग से विकसित हो सकेगी और खेत व किसान दोनों को इसका लाभ होगा। डॉ. मोंगा ने बताया कि संस्थान के कृषि वैज्ञानिक डॉ. ऋषि के नेतृत्व में विभिन्न कीटों में दवाओं की मारक क्षमता की पहचान करने का कार्य किया जा रहा है अर्थात किस-किस श्रेण 3 पर...

**सफेद मक्खी के इलाज में संस्थान ने किया बड़ा शोध दवाओं की प्रतिरोधक क्षमता पर अध्ययन**

ऐसे शोध कार्य से आने वाले समय में कपास और किसान दोनों को फायदा मिलेगा। संस्थान की गतिविधियों को पांच वषों समीक्षा बैठक

**सकाळ**

**गुलाबी बॉडअळीच्या व्यवस्थापनाविषयी जनजागृती**

**सकाळ वृत्तसेवा**

गिरड, ता. ३१ : सर्वत्र गुलाबी बॉडअळीच्या नियंत्रणासाठी प्रचार-प्रसार होत असला तरी शास्त्रशुद्ध माहिती शेतकऱ्यांपर्यंत पोचवी यासाठी केन्द्रीय कापूस संशोधन संस्थेच्या पुढाकारातून समुद्रपूर तालुक्यातील शेतकऱ्यांना मार्गदर्शन करण्यात येत आहे.

येथील मगन संग्रहालयाच्या नैसर्गिक शेती विकास केंद्रात तज्ज्ञांनी गुलाबी बॉडअळीचे एकात्मिक व्यवस्थापन आणि उपाययोजना सुचविल्या. यावेळी शेतकऱ्यांना कामगंध सापळ्याचे वितरण करण्यात आले. याप्रसंगी केन्द्रीय कापूस अनुसंधान संस्थेचे वरिष्ठ शास्त्रज्ञ डॉ. सिद्धार्थ वासनिक, डॉ. नंदिनी गोगटे (नरखेडकर), वनस्पती प्रजननशास्त्र डॉ. सर्वानंद आदींची उपस्थिती होती. कापूस संशोधन केंद्राच्या संशोधनाचा आणि उपक्रमाचा लाभ घेण्यासाठी

ई-कापूस ध्वनी संदेश प्रणालीमध्ये शेतकऱ्यांनी नोंदणी करावी, असे आवाहन वरिष्ठ शास्त्रज्ञ डॉ. सिद्धार्थ वासनिक यांनी केले. कापूस पिकात कामगंध सापळे लावण्याच्या पद्धती आणि उपयोगिता याविषयी कीटकशास्त्रज्ञ डॉ. चीन्नाबाबू नाईक यांनी मार्गदर्शन केले. तर कापूस पिकावरील रोगांची ओळख व एकात्मिक व्यवस्थापन याविषयी डॉ. दीपक नगराळे, कीटकनाशकांची सुरक्षित हाताळणी आणि प्रमाणित औषधांचा वापर याविषयी डॉ. शैलेश गावंडे यांनी मार्गदर्शन केले. या शिबिरात गिरड परिसरातील शेकडो शेतकरी सहभागी झाले होते. संचालन मगन संग्रहालयाचे केंद्रप्रमुख गजानन गारघाटे यांनी केले. मानस गजबे यांनी आधार मानले. आयोजनाकरिता सुरेश सेलेंगे, शंकर भिसेकर, शिलास गणवीर, विष्णू ब्राह्मणवाडे, राजेंद्र बावणे, विनोद बारकर, सचिन उरकुडे, प्रशांत मेश्राम यांनी सहकार्य केले.

Nagpur, Vardha-Today  
01/08/2018 Page No. 3

## यह होगा लाभ...

कीट पर दवाओं का असर कम हो रहा है। जिन दवाओं का असर कम या खत्म होता जा रहा है उन्हें पैकेज से हटाने की सिफारिश की जा रही है और जो दवाएं कारगर साबित हो रही हैं उन्हें पैकेज में शामिल किया जा रहा है। इस शोध कार्य को भी समीक्षा करने वाली टीम ने सराहा और इन सभी गतिविधियों के संचालन में संस्थान को आधारभूत ढांचा, वैज्ञानिक, आर्थिक व अन्य सभी प्रकार की जरूरतों को पूरा करने का प्रयास दिया।

## केन्द्रीय कपास

### अनुसंधान...

निम्बालकर की अध्यक्षता में सिरसा आई कमेटी में सीआईसीआर के पूर्व निदेशक डॉ. बी.एम. खादी, तेलंगाना यूनिवर्सिटी के पूर्व डीन डा. टी.वी.के.सिंह व वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. के.वी. भट्ट शामिल थे। इस टीम ने 6 व 7 सितंबर केन्द्रीय कपास अनुसंधान केन्द्र के द्वारा चलाई जा रही पिछले पांच वर्षों अनुसंधानात्मक कार्यों की जानकारी ली और उनसे कपास व किसान को होने वाले फायदे को लेकर गहरा संतोष व्यक्त किया। केन्द्र के अध्यक्ष एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. दिलीप मोंगा ने बताया कि समेकित रोग एवं कीट प्रबंधन के क्षेत्र में संस्थान द्वारा फफूंद से सफेद मक्खी को खत्म करने के क्षेत्र में विस्तृत शोध कार्य चल रहा है जो उत्तर भारत में अपने आप में एक बड़ा कार्य है। उन्होंने बताया कि कुल 300 कल्टर के माध्यम से

यह पहचान की जा रही है कि सफेद मक्खी के अंडों व बच्चों पर किसका असर अधिक है। इनमें से टॉप टैन कल्टर निकालकर उनमें से भी आगे दो या तीन कल्टर तैयार करके अपने संतर्पण सहित देश के अन्य संतर्पण पर भेजा जाएगा ताकि सही प्रमाणिकता प्राप्त की जा सके।

## मौसम अनुकूल, सोयाबीन...

हैक्टयर से बढ़कर 10.46 लाख हैक्टयर में हो चुकी है।

पिछले साल घटा था उत्पादन : मंत्रालय के चौथे आर्थिक अनुमान के अनुसार फसल सीजन 2017-18 में सोयाबीन का उत्पादन का उत्पादन घटकर 109.81 लाख टन का ही हुआ था, जबकि इसके पिछले साल इसका उत्पादन 131.59 लाख टन का हुआ था।

सोया डीओसी की कीमतों में आयेगी गिरावट : साई सिमरिन फूड, लिमिटेड के डायरेक्टर नरेश गौनका ने बताया कि सोया डीओसी के भाव 27,300 से 27,800 रुपये प्रति टन एक्स फैक्ट्री और 27,500 से 28,000 रुपये प्रति टन कांडला बंदरगाह पर रहे। इंदौर में सोया रिफाईंड तेल के भाव 740 से 745 रुपये प्रति 10 किलो रहे। उन्होंने बताया कि अक्टूबर में सोयाबीन की नई फसल की आवक बनने पर सोया डीओसी की कीमतों में और गिरावट आने का अनुमान है।

## मानसूनी बारिश...

बढ़ी है, इनकी बुवाई बढ़कर 173.95 लाख हैक्टयर में हो चुकी

## मीटिंग

वरिष्ठ वैज्ञानिकों की टीम ने पांच बरसों में कॉटन पर रिसर्च का लिया जायजा, टीम में कई प्रमुख शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल

# कॉटन उत्पादन पर खर्च कम करना जरूरी : डॉ. निंबलकर

भारत न्यूज़ सिरसा

कॉटन के उत्पादन पर कम खर्च हो और कॉटन उत्पादन करने वाले किसानों की आय में इजाजा हो। कपास वैज्ञानिकों को इस संबंध में कोई नया तरीका खोजना चाहिए।

यह बात डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विश्वविद्यालय अकोला के पूर्व वाइस चांसलर डॉ. एसए निंबलकर ने कही। वे केन्द्रीय कपास अनुसंधान सिरसा केंद्र में पिछले पांच बरसों में कॉटन पर जो रिसर्च हुआ उसका जायजा लेने के लिए केन्द्रीय रिस्यू टीम के वैज्ञानिकों की मीटिंग को संबोधित कर रहे थे। टीम में आईसीआर-सीआईसीआर के पूर्व निदेशक डॉ. बीएम खादी, नेशनल ब्यूरो ऑफ ग्रॉट जेनेटिक रिसोर्स नई दिल्ली के पूर्व प्रो. डॉ. केवी भट्ट, श्रीगंगानगर से रिटायर्ड डायरेक्टर रिसर्च डॉ. एमए शंकर, हैदराबाद से आए वैज्ञानिक प्रो. टीवीके सिंह और एमपी वेणुगोपालन भी शामिल थे। इनके अलावा सीआईसीआर सिरसा के अध्यक्ष डॉ. दिलीप मोंगा के अलावा डॉ. ओपी टुटेजा, डॉ. आरए मीना, डॉ. सुरेंद्र कुमार, डॉ. ऋषि कुमार, डॉ. सतीश जैन और डॉ. अमर्प्रीत सिंह भी थे।



सिरसा। कॉटन पर अब तक हुए रिसर्च की समीक्षा करते हुए वरिष्ठ वैज्ञानिकों की केन्द्रीय रिस्यू टीम के लीडर डॉ. एमए निंबलकर, सीआईसीआर सिरसा के अध्यक्ष डॉ. दिलीप मोंगा व अन्य वैज्ञानिक।

## केन्द्रीय टीम ने सिरसा सीआईसीआर के अलावा एचएयू आरएयू और पीएचयू का भी दौरा किया

केन्द्रीय टीम के वैज्ञानिकों ने सिरसा सीआईसीआर के अलावा एचएयू हिसार, आरएयू श्रीगंगानगर और पीएचयू लुधियाना के तहत बटिंडा व फरीदकोट एरिया में कॉटन की फसल का जायजा लिया। इस दौरान टीम ने केन्द्र स्तर पर की और से कॉटन के बेहतर उत्पादन के लिए पिछले पांच बरसों में लागू की गई योजनाओं के परिणामों और आगामी पांच बरसों के लिए नई गाइड लाइन भी तैयार की।

## मीटिंग के दौरान चार बातों पर फोकस रहने के लिए निर्देश

केन्द्रीय टीम के वैज्ञानिकों ने जो रिस्यू मीटिंग की उसका लक्ष्यबोध प्राप्त जो विकल्प उसके बारे में सीआईसीआर सिरसा के अध्यक्ष डॉ. दिलीप मोंगा ने बताया कि कॉटन की फसल में कीटी और बीमारियों से बचाव करने के लिए कीटवैधी दवाओं के इस्तेमाल करने की बजाय अन्य विकल्प जैसे नीम आधारित करने, मित्र फफूंद और मित्र कीटों का इस्तेमाल किया जाए। योती में लगाने का जो नतीजा मिले मीटिंग में यह भी निष्कर्ष निकरवा कि वैज्ञानिक कृषि युक्तिवर्तियों में कॉटन की जो किस्में विकसली जाती हैं उनका उपयोग कम हो रहा है। जबकि 90 फीसदी बीटी कॉटन का इस्तेमाल हो रहा है। इस पर रोक लगा कर कृषि युक्तिवर्तियों को अपनी नई किस्मों का उपयोग करने पर जबरन दबाव न होगा। यह भी दखन में रचना होगा कि वैज्ञानिक की आय ज्यादा हो लेकिन उसका लक्ष्य कम हो।



Produced and Published by:  
Chief Editor :  
Associate Editor, design & Media Support :  
Editors:

Dr Vijay N. Waghmare, Director, ICIR  
Dr. S. M. Wasnik  
Dr. M. Sabesh  
Dr Dipak Nagrale, Dr H. B. Santosh,  
Dr D. Kanjana , Dr. Sain, Dr Rakesh Kumar  
& Dr Pooja Verma,

Publication Note: This Newsletter presented online at  
[http://www.cicr.org.in/cotton\\_innovate.html](http://www.cicr.org.in/cotton_innovate.html)

Cotton Innovate is the Open Access ICIR Newsletter

The Cotton Innovate – is published weekly by  
ICAR-Central Institute for Cotton Research  
Post Bag No. 2, Shankar Nagar PO, Nagpur 440010

Phone : 07103-275536; Fax : 07103-275529;  
email: [cicrnagpur@gmail.com](mailto:cicrnagpur@gmail.com), [director.cicr@icar.gov.in](mailto:director.cicr@icar.gov.in)

Citation : Cotton Innovate, Issue-4 Volume-9, 2018,  
ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur.